ikB 2

बड़ा

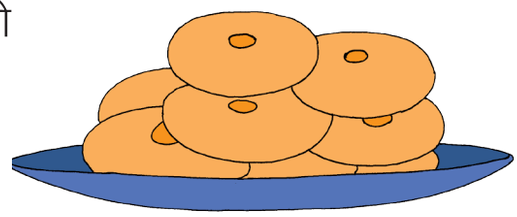

मैं बड़ा हूँ। आपने मेरा नाम सुना होगा। कभी–न–कभी मेरा स्वाद भी अवश्य लिया होगा। दुनिया मुझे जानती–मानती है। चटखारे ले–लेकर मेरा स्वाद लेती है। सच, मेरे लिए उसकी लार टपकती रहती है।

'बड़ा' नाम मुझे कैसे मिला–आप जानना चाहेंगे। यूँ ही बड़ा नहीं बन गया मैं। इसके लिए मुझे बड़े पापड़ बेलने पड़े। भाँति–भाँति के कष्ट–कसाले झेलने पड़े। तब कहीं जाकर 'बड़ा' पद प्राप्त हुआ। आप समझ रहे होंगे–कोरा नून–मिर्च लगाकर ही मैं बड़ा बन गया हूँ। कृपया, इस भुलावे में न रहना। खालाजी का घर नहीं है बड़ा बनना। एक नंबर की टेढ़ी खीर है यह। तनिक मेरी रामकहानी सुनिए। सब समझ में आ जाएगा।

मेरे पूर्व रूप से तो आप परिचित ही होंगे। अरहर, उड़द, मूँग, मोठ आदि अन्न मेरे पूर्व रूप हैं। इन अन्नों को हथचक्की, पनचक्की, तेल–चक्की अथवा विद्युत–चक्की में दलकर दाल बनाई जाती है। चक्की के दो पाटों की रगड़ खाकर दाल बनने में जो मजा आता है, उसे आप नहीं जान सकते। हाँ, दो पाटों के बीच में आप को भी पड़ना पड़ जाए, तो और बात है। कभी पड़े हैं आप?–बोलिए! पड़े होते तो मुझ पर क्या बीतती है, अच्छी तरह महसूस कर सकते।

विशेष रूप से मैं उड़द की दाल का बनाया जाता हूँ। दाल को पूरी–पूरी रात पानी में भिगोकर रखा जाता है। गरमी में तो खैर कोई बात नहीं, लेकिन कहीं जाड़े का हुआ तो बस सी–सी करते, जान पर आ बनती है। जमनाजी में जाड़े की रात में रात–भर डुबकी मारे रहना पड़े आपको, तो आप समझ जाएँगे कि मुझ पर क्या बीतती है?

इसके बाद मुझ पर से छिलका उतारा जाता है। छिलका उतारा जाना किसको अच्छा लगेगा? अजी, आँख पसार दें, मुँह बा दें बड़े–बड़े शेर के बच्चे पर मैं तो वीरों का वीर बना, धैर्यपूर्वक यह सब सहन करता ही हूँ। आखिर बड़ा बनना जो ठहरा।

इसके पीछे सिल–लोढ़े से मेरी खूब पिसाई होती है। मेरे कण–कण का चूरा कर दिया जाता है। दबाव और रगड़ झेलते–झेलते मेरा दम निकलने को हो जाता

है। इतना सब होने पर मैं 'पिट्ठी' नाम पाता हूँ। पिट्ठी बनने पर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा जाता। हाथों से खूब मथ–मथ कर मेरा दम निकाला जाता है।

इतने पर भी बस नहीं। सबसे बढ़कर तो मेरी परीक्षा तब ली जाती है, जब चूल्हा दहकाकर कड़ाही में तेल अथवा घी छोड़ा जाता है।

जब वह खौलने लगता है, तो मुझे हाथ से गोल–गोल बनाकर हथेली से थेप–थेपकर मुझमें चिपटापन लाकर, कभी–कभी मुझमें किशमिश, काली मिर्च, गोला, गिरियाँ आदि भी भरकर उस खौलते तेल में छोड़ दिया जाता है। सच जानना, एकदम छौंक–सा लग जाता है मेरे में! और इसके बाद तुरंत ही मुझे निकाल भी तो नहीं लिया जाता। निकालना तो दूर, जी भरकर उसमें रखकर उलटे खूब लाल किया जाता है मुझे। कोंच–कोंचकर देखा जाता है कि मैं अच्छी तरह सिक गया हूँ कि नहीं। अब मेरे सिकने के बारे में पूरी दिलजमई कर ली जाती है, तब कहीं मुझे बाहर निकाला जाता है। अब आप ही राम–लगती कहिए–है कोई, जो इतना कुछ झेले बड़ा बनने के लिए?

बाहर निकालकर भी मुझे चैन नहीं लेने दिया जाता है। पिट्ठी में तो मसाले की भरमार की गई होती है, अब ऊपर से नून–मिर्च और छिड़क दिया जाता है मुझ पर। 'जले पर नून' इसी को कहते हैं।

बस इस तरह, इतना सब होकर मैं 'बड़ा' नाम पाता हूँ। प्लेटों में सजकर अचार–चटनी के साथ स्वाद देता हूँ। कभी–कभी पानी में भिगो, मुझे कुछ ठंडा कर, दही–सोंठ के साथ भी मेरा जायका लिया जाता है। किसी भी तरह कोई मेरा मजा ले, मुझे इनकार नहीं होता।

बस, यही है मेरी रामकहानी। हाँ, मैं बड़ा हूँ। आपने मेरा नाम सुना होगा। कभी–न–कभी मेरा स्वाद भी अवश्य लिया होगा। दुनिया मुझे जानती–मानती है। चटखारे ले–लेकर, मेरा स्वाद लेती है। सच, मेरे लिए उसकी लार टपकती रहती है।

–हरिकृष्णदास गुप्त 'हरि'

अभ्यास

1- vkb,] ‘kCnksa dk vFkZ tkusa &

- कोच– कोचकर – कड़छी चुभाकर देखना
- चटखारे लेना – मजे से खाना
- जायका – स्वाद
- झेलना – सहना
- दहकाकर – जलाकर
- दिलजमई – तसल्ली
- धैर्यपूर्वक – धीरज के साथ
- पापड़ बेलना – कष्ट सहना
- रकाबियों – तश्तरी, छोटी छिछली थाली

2- ikB ls &

(क) बड़े बनाने के लिए पिट्ठी किस प्रकार बनाई जाती है?

(ख) बड़ा किस–किस चीज के साथ खाने से स्वादिष्ट लगता है?

(ग) खाला जी का घर नहीं है बड़ा बनना' इस वाक्य में बड़ा बनने से क्या अभिप्राय है?

(घ) 'टेढ़ी खीर' का मतलब है कठिन कार्य। बड़ा बनना टेढ़ी खीर क्यों है?

(ङ) 'बड़े' को स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें क्या–क्या मिलाया जाता है?

3- vkidh ckr &

(क) क्या आपके घर में भी कभी बड़े बनाए गए हैं यदि हाँ तो कब?

(ख) कभी–कभी मुझ में किशमिश, गोला, गिरियाँ आदि भी भरी जाती हैं। आपके घर में कौन–कौन से व्यंजनों में ये डाली जाती हैं ?

(ग) जब मेरे सिकने के बारे में पूरी दिलजमई कर ली जाती है, तब कहीं मुझे बाहर निकाला जाता है? इस वाक्य में दिलजमई का अर्थ है–तसल्ली। आपको कौन–कौन से काम करने के बाद तसल्ली होती है?

(घ) अन्न को हथचक्की, पनचक्की, तेलचक्की अथवा विद्युत चक्की में दलकर दाल बनाई जाती है। इस वाक्य में अनेक प्रकार की चक्कियों की बात की गई है। आप किस प्रकार की चक्की से गेहूँ पिसवाते हैं?

(ङ) 'यूँ ही बड़ा नहीं बन गया मैं।' इसके लिए मुझे पापड़ बेलने पड़े। आप बड़ा यानी अच्छा आदमी बनने के लिए क्या–क्या काम करेंगे?

4- ikB l; vkx &

(क) मिर्च ही मिर्च–

कभी–कभी मुझमें किशमिश, काली मिर्च, गोला, गिरियाँ आदि भी भरी जाती है। इस वाक्य में 'काली मिर्च' से हमें मिर्च की विशेषता का पता चलता है कि वह 'काली' है। मिर्च और कैसी हो सकती है लिखें–

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

(ख) पहले हमारे घरों में बिजली नहीं होती थी। तब हम अनाज किस प्रकार की चक्की में पिसवाते थे? आज हम अनाज कहाँ व कैसे पिसवाते हैं। चर्चा करें और बताएँ।

5- Hkk"kk dh ckr &

(क) अनुनासिक को भी समझें बताएँ–

'अरहर, उड़द, मूँग, मोठ आदि मेरे पूर्व रूप हैं।' इस वाक्य में 'मूँग' शब्द में चंद्रबिंदु का प्रयोग हुआ है। पाठ से ऐसे शब्द छाँटकर लिखिए, जिनमें चंद्रबिंदु का प्रयोग हुआ है–

———————— ———————— ———————— ————————

———————— ———————— ———————— ————————

———————— ———————— ———————— ————————

(ख) चक्की ही चक्की–

इन अन्न को हथचक्की, पनचक्की, तेलचक्की अथवा विद्युतचक्की में दल कर

दाल बनाई जाती है।

हाथ से चलाई जाने वाली चक्की को हथचक्की कहते हैं।

बताएँ कि इन चक्कियों का यह नाम क्यों पड़ा?

पनचक्की – ————————————————————

तेल–चक्की – ————————————————————

विद्युत–चक्की – ————————————————————

(ग) पर मैं तो वीरों का वीर बना, धैर्यपूर्वक यह सब सहन करता हूँ।

इस वाक्य में कहा गया है कि बड़ा 'वीर' है। वीरता बड़े की विशेषता है। नीचे कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। निम्नलिखित में से आपमें कौन सी विशेषताएँ हैं ?

बहादुर –	बुद्धिमान	चालाक	मेहनती
सहयोगी	सुंदर	ईमानदार	बेईमान
होशियार	आज्ञाकारी	नटखट	हँसमुख

(घ) दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएँ–

– खाला जी का घर ————————
————————————————————————

– जले पर नमक छिड़कना ————————
————————————————————————

– पापड़ बेलना ————————
————————————————————————

– लार टपकना ————————
————————————————————————

– टेढ़ी खीर ————————
————————————————————————

– दो पाटों के बीच पिसना ————————
————————————————————————

– दम निकलना ————————
————————————————————————

– घबरा जाना ————————
————————————————————————